हिंदी चेतना मास – 2025 का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई में दिनांक 15 सितंबर 2025 को हिंदी चेतना मास – 2025 का शुभारंभ समारोह संस्थान के निदेशक एवं कुलपति डॉ. एन.पी. साहू की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य समिति के पूर्व कार्याध्यक्ष डॉ. शीतला प्रसाद दुबे मुख्य अतिथि थे।

मुख्य अतिथि ने कहा कि भाषा इंद्रधनुषी रंग की होती है, जो भाषा की विविधता को द्योतित करती है। हिंदी के महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने बहुत पहले ही कहा था कि निज भाषा का सम्मान करना हमारा मूल कर्तव्य है। उन्होंने 'रसोई', 'घर' जैसे कई शब्दों का उदाहरण देते हुए कहा कि हम अपनी भाषा और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उपयोग किए जाने वाले शब्दों को हम भूलते जा रहे हैं। हमें अंग्रेज़ियत की मानसिकता से मुक्त होना चाहिए। भारतीय भाषाओं में कई समानताएँ हैं। किसी एक भाषा में प्रयुक्त शब्द उसी अर्थ में कई अन्य भाषाओं में भी पाए जाते हैं। सामान्य तौर पर मनुष्य, जल और भाषा का स्वभाव एक जैसा होता है, जैसे कठिनता से सरलता की ओर आने की प्रवृत्ति। कठिन शब्द समाज में बहुत समय तक प्रयोग में नहीं रहते, लेकिन सरल शब्द हमेशा के लिए टिक जाते हैं और वे दूसरे शब्दों के साथ घुल-मिल जाते हैं। प्रौद्योगिकियों के त्वरित विकास के कारण आजकल किसी भी भाषा में काम करना कठिन नहीं है। लेकिन प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता के कारण हम अपने हाथों से अपनी भाषा लिखना भूलते जा रहे हैं। उन्होंने देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर ज़ोर देते हुए कहा कि देवनागरी लिपि का उच्चारण करना योग करने जैसा है। हिंदी वर्णमाला के सभी वर्गों के अक्षरों के उच्चारण पर ध्यान देंगे तो लगेगा कि हमारा शरीर योग क्रिया से गुज़र रहा है। अपनी संस्कृति की पहचान अपनी भाषा से होती है। इसलिए अपनी भाषा को बढ़ावा देना हमारा पहला कर्तव्य बन जाता है। हमें उस भाषा का ऋण चुकाने की ज़रूरत है, जिस भाषा ने हमें अपनी पहचान दी है।

निदेशक एवं कुलपति डॉ. एन.पी. साहू ने कहा कि भाषा हमारी संस्कृति से जुड़ी है और इसी कारण से हमें अपनी भाषा का सम्मान करना चाहिए, उसके विकास के लिए कार्य करना चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोगों को आपस में जुड़ने के लिए और संप्रेषण के लिए एक भाषा की ज़रूरत थी, वह भाषा हिंदी थी। इसीलिए देश भर में हिंदी लोकप्रिय हुई है। प्रौद्योगिकी के इस युग में किसी भी कार्य करने के लिए भाषा अब बाधा नहीं है। विभिन्न तकनीकी साधनों के माध्यम से हम किसी भी भाषा-भाषी के साथ आसानी विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। हिंदी चेतना मास के

आयोजन की सफलता तब मालूम पड़ेगी, जब इसके प्रभाव का आकलन किया जाएगा। इसलिए कार्यालयीन कार्य में कितनी प्रगति हुई है, इसका आकलन हमें करना चाहिए।

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती पूनम बहल ने कहा कि केंद्र सरकार की राजभाषा हिंदी है। इसलिए हमें हिंदी में कार्य करना अनिवार्य है। हिंदी में कार्य केवल हिंदी चेतना मास के दौरान ही नहीं, बल्कि वर्ष भर किया जाए, तभी हम हिंदी को राजभाषा के रूप में वास्तविक सम्मान दिला सकते हैं।

इससे पूर्व श्री विजयपाल बिजारणियाँ, प्रशासनिक अधिकारी ने केंद्रीय कृषि मंत्री के संदेश और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक का अपील पढ़ा। श्री जगदीशन ए.के., संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने अतिथियों का स्वागत किया और श्रीमती रेखा नायर, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने आभार प्रकट किया। उद्घाटन समारोह के दौरान अतिथियों के कर-कमलों से संस्थान की न्यूज़ लेटर 'मत्स्य दर्पण' का विमोचन भी किया गया।

हिन्दी चेतना मास
ICAR-CIFE

ICAR-CIFE

हिन्दी चेतना मास
ICAR-CIFE

ICAR-CIFE

हिन्दी चेतना मास
ICAR-CIFE

हिन्दी चेतना मास
ICAR-CIFE

हिन्दी चेतना मास
ICAR-CIFE

हिन्दी चेतना मास
ICAR-CIFE

हिन्दी चेतना मास ICAR-CIFE		भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान	